

## जलवायु परविरतन, ग्रीष्म लहर और वनाग्नि

### संदर्भ

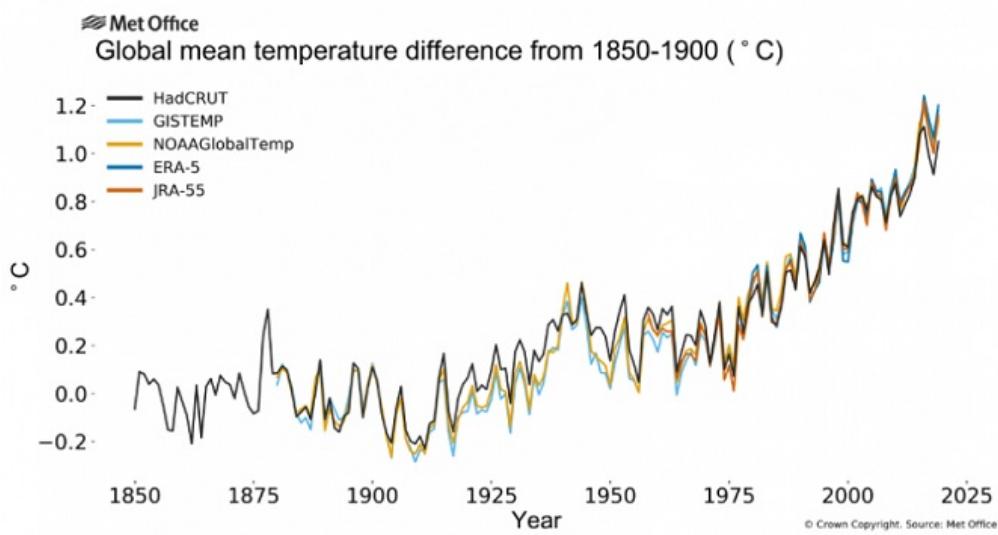
उबलते पानी के मेंढक की कहानी के बारे में सबने सुना होगा, उबलते पानी में एक मेंढक ऐसे कूदता है मानो वह पानी से कूदकर सवयं को बचा लेगा, लेकिन वह मेंढक जो पानी में है, वह धीरे-धीरे गरम हो जाता है और अंत में उसकी मौत हो जाती है। वैश्वकि ऊष्मन अरथात् ग्लोबल वार्मगि का संकट भी हमें इसी तरह दर्जों-दर्जे घेरता जा रहा है ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि हम सवयं को सुरक्षित रखने के लिये महत्वपूर्ण कदम उठाएँ।

### वर्तमान स्थिति

- 15 जनवरी 2020 को [विश्व मौसम विज्ञान संगठन](#) (World Meteorological Organization) के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय डेटासेट के समेकति विश्लेषण के अनुसार, संगठन ने पुष्टिकी किये वर्ष 2016 के बाद वर्ष [2019 दशक का दूसरा सबसे गरम वर्ष](#) रहा।

### औसत तापमान

- पाँच वर्ष (2015-2019) और दस वर्ष (2010-2019) के लिये औसत तापमान रकिंरड स्तर पर काफी अधिक रहा। 1980 के दशक से हर एक दशक पछिले दशक की तुलना में गरम रहा है। इस प्रवृत्ति के आगे भी जारी रहने की उम्मीद है क्योंकि वायुमंडल में ऊष्मा को रोकने वाली ग्रीनहाउस गैसों के रकिंरड स्तर के कारण पृथ्वी की जलवायु में परविरतन आ रहा है।
- इस समेकति विश्लेषण में इस्तेमल किये गए पाँच डेटा सेटों के अनुमान के अनुसार, वर्ष 2019 में वैश्वकि तापमान वर्ष 1850-1900 के औसत तापमान से 1.1 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा, जिसका उपयोग पूर्व-औद्योगिक प्रसिद्धियों का प्रतनिधित्व करने के लिये किया जाता था। वर्ष 2016 एक मजबूत [अल नीनो](#) (El Niño) के कारण रकिंरड स्तर पर सबसे गरम वर्ष रहा है, जिससे ऊष्मन और दीर्घकालिक जलवायु परविरतन प्रभाव अधिक होता है।
- वर्ष 2019 में जुलाई माह को [युरोप में सबसे गरम](#) माह के रूप दर्ज किया गया (जब से वर्ष के तापमान के विषय में रकिंरड दर्ज किया जा रहा है, तब से अभी तक का सबसे गरम माह), इसके चलते बहुत-से लोगों की मौत हो गई, दफ्तरों के साथ-साथ कई आवश्यक सेवाओं को भी बंद रखा गया।



II

### प्रभाव

- तपती गरमी ने न केवल पूरे गोलार्दध के मौसम में परविरतन किया, बल्कि ऑस्ट्रेलिया में अभी तक के सबसे गरम एवं शुष्क वर्ष के रूप में दर्ज किये गए वर्ष 2019 ने वनागन जैसी खतरनाक स्थितियों को भी जन्म दिया जिसकी व्यापकता एवं भयावहता ने संपूर्ण वशिव को झकझोर कर रख दिया।
- अत्यधिक तापमान, गरीषम लहर या हीटवेव और रकिर्ड स्तर पर सूखे की स्थितियों की वसिंगतयाँ नहीं हैं बल्कि ये सभी एक बदलती जलवायु की व्यापक प्रवृत्तियाँ हैं। यदि वैश्विक तापमान में और अधिक वृद्धि होती है तो इससे उत्पन्न होने वाले प्रभावों की भयावहता की कल्पना अतिशयोक्ता नहीं होगी।

## 3.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि

- UNEP की उत्सर्जन गैप रपोर्ट 2019 के अनुसार, कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के मौजूदा स्तर पर, यदि हम केवल पेरसि समझौते की वर्तमान जलवायु प्रतिबिद्धताओं पर निभार करते हैं और उन्हें पूरी तरह से लागू करते हैं, तो 66 प्रतशित संभावना यह है कि इसी के अंत तक वैश्विक ऊषमन में 3.2 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि होगी।

### क्या किया जा सकता है?

- सरकार, कंपनियाँ, उद्योग और जी20 देशों की जनता, जो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के 78 प्रतशित के लिये ज़मिनदार हैं, के डीकार्बोनाइज़ेशन (अरथात् कर्सी पदारथ से कार्बन या कार्बनकि अमल को अलग करना) के लिये सटीक लक्ष्य और समयसीमा तय की जानी चाहिये ताकि इस दिशा में प्रभावी कार्यवाही संभव हो सके।
- इसके अतिरिक्त दक्ष प्रौद्योगिकियों, स्मार्ट खाद्य प्रणालियों और शून्य-उत्सर्जन क्षमता तथा अक्षय ऊर्जा से संचालित इमारतों को विकसित करना चाहिये, साथ ही इसी के अनुरूप अन्य वकिलप अथवा उपाय अपनाने चाहिये ताकि आने वाली पीढ़ी के अस्तित्व को सुरक्षित रखा जा सके।

वर्ष 2020 में वशिव जलवायु प्रतिबिद्धताओं को पूरण करने की दिशा में प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित कर सकता है। यह एक ऐसा वर्ष है जब वैश्विक तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि को सीमित करने के लिये वैश्विक उत्सर्जन में 7.6 प्रतशित की कटौती करने की आवश्यकता है, वर्ष 2030 तक इसमें प्रत्येक वर्ष 7.6 प्रतशित की गणित आनी चाहिये। इससे पहले की वर्ष 2020 में चरम मौसमी घटनाएँ समुदायों और पारस्िथितिक तंत्रों पर उनकी क्षमता से अधिक दबाव बनाए, एक वैश्विक समुदाय के रूप में हमारे पास पृथकी को मेंढक की तरह उबलने से बचाने के लिये प्रयाप्त साधन और अवसर मौजूद हैं, लेकिन अब समय केवल नीतियाँ बनाने का नहीं है, बल्कि उनका प्रभावी क्रयान्वयन करने का है, इसकी और अधिक अनदेखी का परणिम कितना भयावह हो सकता है इसकी कल्पना ऑस्ट्रेलियाई वनागनसे की जा सकती है।